मीराँ

कवि–परिचय

मध्यकालीन भक्ति काव्य धारा के कृष्ण भक्त कवियों में सर्वोपरि स्थान रखने वाली मीराँ का जन्म संवत् 1555 में कुड़की नामक ग्राम में हुआ। बचपन में ही मीराँ की माता का देहान्त हो जाने के कारण इनका पालन पोषण दूदाजी के पास मेड़ता में हुआ। वह अपने पिता रत्न सिंह की इकलौती पुत्री थी। मीराँ बाल्यावस्था से ही कृष्ण–प्रेम में मतवाली हो गई थी। यह प्रेम धीरे–धीरे अटल अनुराग में परिवर्तित हो गया।

मीराँ ने कृष्ण को ही अपना सर्वस्व माना। पारिवारिक व सामाजिक सभी कष्टों को सहर्ष झेलती हुई मीराँ जीवन पर्यन्त कृष्ण–भक्ति में लीन रही और अन्त में कृष्ण में ही अंन्तर्लीन हो गई।

मीराँ ने 'नरसी जी रो मायरो', 'गीत गोविन्द की टीका', 'मीराँ बाई का मलार', 'राग सोरठ के पद', 'मीराँ के पद' आदि की रचना की। मीराँ के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में है। कोई चमत्कार दिखाने के लिए उन्होंने काव्य नहीं रचा। उनका काव्य सहज है। भगवान के प्रति अनन्य अनुराग उनके पदों में सहज रूप से व्यक्त हुआ है।

पाठ–परिचय

विष पीकर मीराँ ने जन–जन को भक्ति और प्रेम के अमृत का रसपान कराया है। अपने विद्रोही स्वर में मीराँ ने पीड़ित मानवता और सदियों से शोषित नारी समाज की पीड़ा को जन–आन्दोलन का विराट स्वरूप प्रदान किया है। प्रस्तुत पदों में जहाँ एक ओर मीराँ की विरह–वेदना दिखाई देती है वहीं दूसरी ओर कृष्ण के उद्धारक स्वरूप का भी चित्रण मिलता है। सारे कष्ट व पीड़ा को आत्मसात कर मीराँ की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति की बानगी प्रस्तुत पदों में मिलती है।

**** ****

(1)

[redacted]

Mahesh kumar bairwa

(1)

राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी।(टेक)
जैसे कन्चन दहत अगनि में, निकसत बाराँबांणी।
लोकलाज कुल–काण जगत की, दह बहाय जस पांणी।
अपणे घर का परदा करले, मैं अबला बौरांणी।
तरकस तीर लग्यों मेरे हियरे, गरक गयो सनकांणी।
सब संतन पर तनम न वारों,चरण –कंवल लपटांणी।
मीरां को प्रभू राखि लई हैं, दासी अपणी जाणी।।

कठिन शब्दार्थ :–थे–आपने। म्हे–मैनें। कंचन–सोना। बाराँबांणी–पूरी तरह खरा, विशुद्व। जस–जैसे।पांणी–पानी। कुल–काण– कुल की मर्यादा। बौरांणी–पागल। हियरे–हद्य में। सनकांणी–पागलों की तरह आचरण करना। गरक गयो–गहरा घाव कर गया।
प्रसंगः–प्रस्तुत पद भक्त कवयित्री मीरां द्वारा रचित पदावली से उद्वत है। इसमें मीरां ने बताया कि परिवार के लोगों के द्वारा बांधाऐ डालने पर भी वह प्रभू भक्ति में निमग्न रहीं। इसी बारे में वर्णन है।
व्याख्याः–मीरां कहती है कि राणाजी ने कृष्ण का भजन करने से नाराज होकर मुझे जहर दिया, यह बात मैं जानती हूं। मैनें उन बाधाओं को अपनी परीक्षा के रूप में माना। जिस प्रकार सोने को अग्नि में तपाया जाता हे और वह खरा सोना बनकर निकलता है, उसी प्रकार बाधाओं से मेरी कृष्ण भक्ति बढी ही है। कम नहीं हुई। मैनें तो कृष्ण भक्ति की खातिर लोकलाज , कुल की मर्यादा और संसार को ही पानी की तरह बहा दिया है, त्याग दिया है। उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया । आपको यदि मेरा व्यवहार अखरता है तो आप मेरा व्यवहार न देखें, मैं तो कृष्ण प्रेम में पागल सी हो गई हूं। तरकश से निकलकर हद्य में लगे तीर की तरह कृष्ण प्रेम मेरे हद्य में समा गया है। उससे मैं पागल दीवानी सी हो गइ हूँ। मुझे बस कृष्ण की भक्ति करने की धुन लग गई है। और बातों का अब कोई ध्यान ही नही रहता । मैं संतो की आभारी हूं जिन्होने मुझमें भक्ति बढाई है। मैं संतो पर अपना मन तन न्यौछावर करती हूं। अपने आराध्य के चरण कमलों की वंदना करती हूं। मीरां कहती है कि कैसी भी परिस्थिति क्यों न आई हो, मुझे मेरे प्रभ ने अपनी दासी मानकर बचाया है और अपनाया है।

(2)

हेली म्हासूँ हरि बिन रह्यौ न जाय।
सास लडै मेरी ननद खिजावै, राणां रह्यो रिसाय।
पहरो भी राख्यो चौकी बिठार्‌यो,ताला दियो जुडाय।
पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोडी जाय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हारी दाय।।

कठिन शब्दार्थ :– हेली–सखी। खिजावै–चिढाती है। रिसाय– क्रोधित होना। दाय– हिस्सा, दान, पसन्द।
प्रसंग–इसमें मीरां ने स्वजनों के द्वारा उसके साथ किये गये दुर्व्यवहारों का वर्णन किया है।

व्याख्याः–मीरां कहती है कि हे सखी। मुझसे प्रियतम कृष्ण के बिना रहा नहीं जाया। मेरे इस कृष्ण प्रेम के कारण सभी परिवारजन मुझसे नाराज है। सास मुझसे लडती है तथा ननद मुझे चिढाती रहती है। इसके साथ ही राणाजी मुझ पर क्रोध करते रहते है। उन्होनें मुझ पर पहरा बैठा रखा है और मेरी निगरानी के लिए चौकियां बिठा रखी हैं। यहां तक कि मुझे ताल में बंद कर दिया है। लेकिन हे सखी! मेरी और कृष्ण की प्रीति तो पूर्वजन्म की और काफी पुरानी है, अर्थात् जन्म जन्मांतरों की है। वह भला कैसे छोडी जा सकती है? आशय यह है कि उनके साथ मेरी प्रीति कभी नहीं टूटने वाली हे। मीरां कहती है कि मेरे आराध्य तो एक मात्र गिरधर नागर है, उन्हें छोडकर मुझे और कोई नहीं रूचता है।

(3)हरि तुम हरो जन की भीर।
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढायो चीर॥
भक्त कारण रूप नरहरि, धरयो आप शरीर।
हिरणकश्यपु मार दीन्हों, धरयो नाहिंन धीर॥
बूडते गजराज राखे, कियो बाहर नीर।
दासि 'मीरा लाल गिरिधर, दु:ख जहाँ तहँ पीर॥

कठिन शब्दार्थः–जन–भक्त। भीर–पीडा,दु:ख। द्रोपदी–पाण्डवों की पत्नी। नरहरि–नृसिंह–। बुडते–डूबने पर। गज–हाथी। ग्राह–मगर। नीर–पानी।

प्रसंगः– प्रस्तुत अवतरण मीरा पंदावली से लिया गया है। मीराबाई कृष्ण को उनके द्वारा की गई भक्तों की सहायता की विशेषता याद दिलाती है और चाहती है कि कृष्ण उसी प्रकार उसका भी उद्धार करें।

व्याख्याः–मीरां कहती है कि हे हरि! आप अपने जनों, भक्तों का दु:ख अवश्य ही दूर कर देते हो। आपने अपने भी द्रोपदी की लाज बचाई थी। दु:शासन तो भरी सभा में द्रोपदी का चीर खींचकर उसे निर्वस्त्र करना चाहता था। आपने ही द्रोपदी का चीर बढा दिया था और द्रोपदी की लाज रह गई थी। आपने अपने भक्त प्रहलाद के कारण नृसिंह अवतार लिया था, नृसिंह का शरीर धारण किया था और तब प्रहलाद् के अत्याचारी पिता हिरण्यकश्यप् को मार डाला था। आप दुष्ट को मारे बिना धैर्य धारण नहीं कर सके थें। मगरमच्छ हाथी को पकडकर जल में खींचे लिये जा रहा था और हाथी डुबने ही वाला था। तब आपने ग्राह को मारकर हाथी को पानी से बाहर निकाला था।मीरां कहती है कि हे गिरिधर कृष्ण! मैं आपकी दासी हूँ। आपके बिना मैं जहां भी रहूँ पीडा ही भोगती हूँ।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरो दरद न जाणै कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस विध होय।
गगन मंडल पर सेज पिया की किस विध मिलणा होय।
घायलकी गत घायल जाणै जो कोई घायल होय।
जौहरि की गति जौहरी जाणै दूजा न जाणै कोय।
दरद की मारी बन-बन डोलूँ बैद मिल्या नहिं कोय।
मीराँ की प्रभु पीर मिटे जब बैद साँवलिया होय।

कठिन शब्दार्थ :– दिवानी –पागल। जाणै–जाने। सेज–शयया। जद – जब । बैद–बैद्य। गगन मण्डल– शून्य स्थित सहस्रार चक्र। जौहर –रत्न।
प्रसंगः–प्रस्तुत अवतरण मीरा पदावली से उद्वत है। मीरां कृष्ण के वियोगजनित दु:,ख से ग्रस्त हे। उसे अपने प्रिय कृष्ण से मिलना कठिन जानकर और दु:ख होता है। वह विरह में बैचेन रहती है और कृष्ण के दर्शन की ही कामना किया करती है।
व्याख्याः–मीरां अपनी सखी से कहती है कि हे सखी! मैं तो कृष्ण से मिलने के दर्दसे दीवानी, पगली हो रही हूँ। मेरे हदय में जितना दु:ख है उसका कोई अनुमान नहीं लगा सकता । कृष्ण से मिलना वैसे ही कठिन है जैसा सूली के ऊपर बनी हुई शयया पर सोना कठिन है। गगन मण्डल में शयया हो, उस तक पहुंचना जितना कठिन है, उतना ही कठिन कृष्ण से मिलना हे। मैं कृष्ण बिना दु:खी हूँ। मेरी स्थिति को मेरे जैसा भुक्तभोगी ही जान सकता है। जिसके शरीर में घाव हो गया हो, वही घायल की पीडा का अनुमान लगा सकता है या स्वयं रत्न। मैं दर्द के मारी चैन नहीं पाती हूँ और मारी मारी फिरती हूँ।किन्तू मेरी पीडा दूर करने वाला कोई नहीं मिला। जिस प्रकार बीमार की पीडा को वैद्य दूर करता है उसी प्रकार मेरी पीडा तो साँवलिया, कृष्ण ही दूर कर सकते है।

1. विरहणी मीरां ने अपनी पीडा का वर्णन किया है।
2. आध्यात्मिक विरह की पीडा सामान्य पीडा से बहुत भिन्न प्रकार की होती है। उसे वैद्य आदि दूर नहीं कर सकते ।वह तो ईश्वर दर्शन से हि दूर हो सकती है।
3. ईश्वर को प्राप्त करना कठिन है। यह बात सूली ऊपर सेज गगन मंडल पै सेज द्वारा व्यक्त की गई है।

(5)

मतवारो बादर आए रे, हरि को सनेसो कबहुं[1] न लाए रे ।। टेक ।।
दादर मोर पपइया बौलै, कोयल सबद सुणाए रे ।
कारी अंधियारी बिजरी चमकै, बिरहणि अति डरपाए रे ।
गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाए रे ।
कारी[2] नाग बिरह अति जारी, मीरां मन हरि भाएरे ।।81।।[3]

1-कुछ फूंके कालीनाग बिरह की जारी मतवारो = मतवाले की भाँति घूमता हुआ। सनेसो = संदेशा। सुणाये = सुनाती है। गाजै = मेघ गर्जता है। बाजै = लगता है। मधुरिया = मंदगामी, सुहावना। मेह = मेघ, वर्षा। झड़ लाए = बरस रहा है। कारी नाग = काली नाग। विरह = विरहरूपी। जारी = जलाई हुई। भाए = सुहाए।

प्रसंगः–प्रस्तुत पद मीरा द्वारा रचित पदावली से संकलित है। इसमें मीरां ने वर्षाकालीन प्रकृति का उद्दीपन रूप से वर्णन कर अपनी विरह वेदना प्रकृट की है।

व्याख्याः– मीरां कहती है कि मस्ती को उमडने –घुमडने वाला बादल आया है, परन्तु वह मेरे प्रवासी प्रियतम कृष्ण का संदेश नही लाया है। इस ऋतु में मेढक, मोर, व पपीहा मधुर स्वर में बोलने लग गये है और कोयल अपने मीठे शब्द सुना रही है। बादलों की घटा से रात काली एवं अंधकार से व्याप्त है। और बिजली चमक रही है। जो कि मुझ जैसी विरहणी नारियों को बहुत डरा रही है। बादलों की गर्जना को पवन मधुरता से चारों ओर फैला रहा है और बादलों की रिमझिम लगातार हो रही है। वर्षा की झडी लगातार हो रही ह।मीरा कहती है कि काला नाग जैसा विरह मुझे अत्यधिक व्यथित कर रहा है। ऐसे समय पर मुझे प्रियतम का मधुर स्मरण हो रहा है और मेरे मन को वे अतीव भा रहे है।